राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर

" योगश्चित्तवृत्ति निरोधः "

बी. एन. वाई. एस.

(BACHELOR OF NATUROPAHTY AND YOGIC SCIENCE)

उपाधि हेतु

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगिक विज्ञान स्नातक
(बी.वाई.एन.एस.)
"Bachelor of Yogic and Naturopathy Sciences"

1 –

(i) स्वास्थ्य संरक्षा के क्षेत्र में प्राकृतिक एवं योग पद्धति में प्रशिक्षित एवं योग्य स्नातकों का निर्माण किया जाना। "भारतीय विज्ञान की प्राकृतिक एव योग विधाओं का जनस्वास्थ्य–संरक्षण एवं रोग–निवारण में उपयोगिता का प्रचार–प्रसार करना "

(ii) पाठ्यक्रम अवधि –

(A)	मुख्य पाठ्यक्रम	5 वर्ष
(B)	परीक्षोपरान्त प्रशिक्षण	6 माह

पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेने के उपरान्त प्रदत्त उपाधि :

बी.वाई.एन.एस.(**Bachelor of Yogic and Naturopathy Science**)

(iii) न्यूनतम प्रवेश संख्या –

सम्बद्ध महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष प्रथम वर्ष में 20 से 60 छात्रों को प्रवेश दिया जा सकेगा। आरक्षण प्रावधान राज्य सरकार के निर्धारित नियमानुरूप होगा, आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के स्थान रिक्त रह जाने पर सामान्य वर्ग से प्रवेश दिये जा सकेंगे।

2 – मुख्य पाठ्यक्रम – प्रतिवर्ष वर्ष में दो बार जून एवं दिसम्बर माह में अग्रलिखित परीक्षाऐं आयोजित की जावेगी–

- प्रथम बी. वाई. एन. एस. परीक्षा
- द्वितीय बी. वाई. एन. एस. परीक्षा
- तृतीय बी. वाई. एन. एस. परीक्षा
- चतुर्थ बी. वाई. एन. एस. परीक्षा
- पंचम बी. वाई. एन. एस. परीक्षा

3 – प्रवेश योग्यता – किसी भी विषय में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से 10+2 (सीनियर सैकेण्ड्री) विज्ञान/कला वर्ग परीक्षा या तत्सम परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र प्रवेश हेतु पात्र होंगे। प्रवेश मेरिट अथवा प्रवेश परीक्षा में प्राप्त वरीयता द्वारा दिये जा सकेंगे।

4 – प्रथम वर्ष बी.वाई.एन.एस. में प्रविष्ट छात्र एक वर्ष/सत्र तक सम्बद्ध महाविद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहने पर प्रथम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा के लिये पात्र होगा। इसी प्रकार क्रमशः प्रथम वर्ष में उत्तीर्ण छात्र द्वितीय वर्ष में, द्वितीय वर्ष में उत्तीर्ण छात्र तृतीय वर्ष में, तृतीय वर्ष में उत्तीर्ण चतुर्थ वर्ष में तथा चतुर्थ वर्ष में उत्तीर्ण छात्र अंतिम वर्ष बी.वाई.एन.एस. में प्रवेश के लिये पात्र होगा।

5 – यदि कोई छात्र दो विषयों में अनुत्तीर्ण रहता है तो वह अग्रिम कक्षा में अस्थाई प्रवेश प्राप्त कर सकेगा, किन्तु अनुत्तीर्ण विषयों की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद ही अग्रिम वर्ष की परीक्षा के लिये पात्र हो सकेगा। तीन अथवा तीन से अधिक विषयों में अनुत्तीर्ण छात्र अग्रिम कक्षा में अस्थाई प्रवेश के लिये भी पात्र नहीं होगा।

6 – किसी भी कक्षा की मुख्य परीक्षा में अनुत्तीर्ण छात्र को दो पूरक अवसर प्रदान किये जायेंगें, दो पूरक प्रयासों में अनुत्तीर्ण रहने पर सम्बन्धित वर्ष के सम्पूर्ण विषयों की पुनः परीक्षा देनी होगी, किन्तु इस अंतिम प्रयास में असफल छात्र का प्रवेश सम्बद्ध महाविद्यालय से निरस्त कर दिया जायेगा, ऐसा छात्र पुनः प्रवेश का पात्र नहीं होगा।

7 – **(i) इन्टर्नशिप (परीक्षोपरान्त प्रशिक्षण)** – अंतिम वर्ष बी.वाई.एन.एस. परीक्षा सभी विषयों में उत्तीर्ण छात्र छः माह का परीक्षोपरान्त प्रशिक्षण (Internship) विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था से किये जाने का पात्र होगा। मान्यता प्राप्त संस्थान के प्राचार्य द्वारा संतोषप्रद रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर लिये जाने का प्रमाण–पत्र प्रस्तुत करने पर ही "बी.वाई.एन.एस." उपाधि प्राप्त किये जाने का पात्र होगा।

(ii) छः माह का परीक्षोपरान्त प्रशिक्षण योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र प्रविष्ट आतुरों पर प्राप्त करेगा –

1. योग उपचार पद्धतियां – तीन माह 2. प्राकृतिक उपचार पद्धतियां – तीन माह

इस अवधि में उपचार पद्धतियों के प्रशिक्षण के साथ–साथ आतुरालयीय प्रबन्धक, रोगी रोग परीक्षण विधियां, वैयक्तिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य प्रबन्धन सह आहार एवं पोषण की विधियों का प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।

8 – परीक्षा, प्रश्नपत्र एवं प्रशिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा रहेगी। संदर्भ संस्कृत एवं अंग्रेजी में दिये जा सकेंगे।

9 – **पाठ्यक्रम एवं परीक्षा योजना –**

बी.वाई.एन.एस. पाठ्यक्रम में प्रविष्ट प्रत्येक छात्र का निम्नांकित विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा –

- प्रथम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा – 01–01. शरीर रचना
  01–02. शरीर क्रिया एवं जैव रासायनिक विज्ञान
  01–03. योग एवं वैदिक शारीर
  01–04. प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त

01–05. संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य

01–06. योगाभ्यास

- द्वितीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा – 02–01. विकृति विज्ञान एवं सूक्ष्म जैव रासायनिक विज्ञान
  02–02. स्वस्थवृत्त एवं सामाजिक स्वास्थ्य
  02–03. चुम्बक एवं वर्ण चिकित्सा
  02–04. योग दर्शन एवं सिद्धान्त सह योगाभ्यास
  02–05. उपवास चिकित्सा

- तृतीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा – 03–01. अष्टांग योग, षड्दर्शन एवं योगाभ्यास
  03–02. प्राकृतिक चिकित्सा निदान
  03–03. प्राथमिक चिकित्सा एवं आधुनिक निदान विधियाँ
  03–04. मेनिपूलेटिव थैरापेटिक्स
  03–05. मर्मवेधन (एक्यूपंचर विधियाँ)

- चतुर्थ बी.वाई.एन.एस. परीक्षा – 04–01. आहार एवं पोषण विज्ञान
  04–02. प्रसूति एवं स्त्री रोग चिकित्सा
  04–03. योग एवं रोग उपचार
  04–04. जल एवं मृतिका उपचार
  04–05. भौतिक चिकित्सा

- पंचम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा – 05–01. द्रव्यगुण विज्ञान
  05–02. जल चिकित्सा
  05–03. व्यावहारिक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान
  05–04. चिकित्सालय प्रबन्धन एवं अनुसंधान विधियाँ
  05–05. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आधारित एक लघु निबन्ध

10 – किसी भी विषय में अधिकतम अंकों में से 75 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने पर विशेष योग्यता सम्बन्धित विषय में दी जावेगी, किन्तु, विशेष योग्यता प्रथम प्रयास में मुख्य परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को ही दी जा सकेगी।

11 – प्रत्येक लिखित प्रश्न पत्र परीक्षा की समयावधि 3 घंटा रहेगी।

(i) न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा में पृथक पृथक आवश्यक रूप से प्राप्त करने पर ही उत्तीर्ण माना जायेगा।

(ii) प्रत्येक प्रश्न पत्र में छः प्रश्न होंगे। जिनमें से पांच के उत्तर दिये जाने आवश्यक होंगे।

पाठ्यक्रम एवं परीक्षा योजना : बी.वाई.एन.एस. पाठ्यक्रम में प्रविष्ट प्रत्येक छात्र का निम्नांकित विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा –

S. No.	Subject	No. of Papers	Theoury		Practical	
			Maximum Marks	Minimum Pass Marks	Maximum Marks	Minimum Pass Marks
1-	प्रथम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा					
1.	शरीर रचना	1 (एक)	100	50	100	50
2.	शरीर क्रिया एवं जैव रासायनिक विज्ञान	1 (एक)	100	50	100	50
3.	योग एवं वैदिक शारीर	1 (एक)	100	50	50 (मौखिक)	25
4.	प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त	1 (एक)	100	50	100	50
5.	संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य	1 (एक)	100	50	50 (मौखिक)	25
6.	योगाभ्यास	प्रायोगिक	--	--	100	50
2-	द्वितीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा					
1.	विकृति विज्ञान एवं सूक्ष्म जैव रासायनिक विज्ञान	1 (एक)	100	50	100	50
2.	स्वस्थवृत्त एवं सामाजिक स्वास्थ्य	1 (एक)	100	50	100	50
3.	चुम्बक एवं वर्ण चिकित्सा	1 (एक)	100	50	100	50
4.	योग दर्शन एवं सिद्धान्त सह योगाभ्यास	1 (एक)	100	50	100	50
5.	उपवास चिकित्सा	1 (एक)	100	50	50 (मौखिक)	25
3-	तृतीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा					
1.	अष्टांग योग, षड्दर्शन एवं योगाभ्यास	1 (एक)	100	50	100	50
2.	प्राकृतिक चिकित्सा निदान	2 (दो)	100	50	100	50
3.	प्राथमिक चिकित्सा एवं आधुनिक निदान विधियाँ	1 (एक)	100	50	100	50
4.	मेनिपूलेटिव थैरापेटिक्स	1 (एक)	100	50	100	50
5.	मर्मवेधन (एक्यूपंचर विधियाँ)	1 (एक)	100	50	100	100
4-	चतुर्थ बी.वाई.एन.एस.					
1.	आहार एवं पोषण विज्ञान	1 (एक)	100	50	100	50
2.	प्रसूति एवं स्त्री रोग चिकित्सा	1 (एक)	100	50	100	50
3.	योग एवं रोग उपचार	1 (एक)	100	50	100	50
4.	जल एवं मृतिका उपचार	1 (एक)	100	50	100	50
5.	भौतिक चिकित्सा	1 (एक)	100	50	100	50
5-	पंचम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा					
1.	द्रव्यगुण विज्ञान	1 (एक)	100	50	100	50
2.	जल चिकित्सा	1 (एक)	100	50	100	50

3.	व्यावहारिक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान	1 (एक)	100	50	100	50
4.	चिकित्सालय प्रबन्धन एवं अनुसंधान विधियाँ	1 (एक)	100	50	100	50
5.	योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आधारित एक लघु निबन्ध	1 (एक)	स्वीकृत/अस्वीकृत		---	---

S. No.	Subject	No. of Papers	सैद्धान्तिक Theory Classes	प्रायोगिक Practical Classes
1-	प्रथम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा			
1.	शरीर रचना	1 (एक)	50	50
2.	शरीर क्रिया एवं जैव रासायनिक विज्ञान	1 (एक)	50 + 30	50 + 30
3.	योग एवं वैदिक शारीर	1 (एक)	90	--
4.	प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त	1 (एक)	90	70
5.	संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य	1 (एक)	90	--
6.	योगाभ्यास	--	--	दैनिक योगाभ्यास
2-	द्वितीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा			
1.	विकृति विज्ञान एवं सूक्ष्म जैव रासायनिक विज्ञान	1 (एक)	80	40
2.	स्वस्थवृत्त एवं सामाजिक स्वास्थ्य	1 (एक)	90	40
3.	चुम्बक एवं वर्ण चिकित्सा	1 (एक)	80	60
4.	योग दर्शन एवं सिद्धान्त सह योगाभ्यास	1 (एक)	90	40
5.	उपवास चिकित्सा	1 (एक)	90	--
3-	तृतीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा			
1.	अष्टांग योग, षड्दर्शन एवं योगाभ्यास	1 (एक)	80	80
2.	प्राकृतिक चिकित्सा निदान	2 (दो)	90	40
3.	प्राथमिक चिकित्सा एवं आधुनिक निदान विधियाँ	1 (एक)	90	40
4.	मेनिपूलेटिव थैरापेटिक्स	1 (एक)	90	40
5.	मर्मवेधन (एक्यूपंचर विधियाँ)	1 (एक)	90	40
4-	चतुर्थ बी.वाई.एन.एस.			
1.	आहार एवं पोषण विज्ञान	1 (एक)	90	60
2.	प्रसूति एवं स्त्री रोग चिकित्सा	1 (एक)	90	60
3.	योग एवं रोग उपचार	1 (एक)	90	60
4.	जल एवं मृतिका उपचार	1 (एक)	90	40
5.	भौतिक चिकित्सा	1 (एक)	90	40
5-	पंचम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा			
1.	द्रव्यगुण विज्ञान	1 (एक)	80	40

2.	जल चिकित्सा	1 (एक)	80	40
3.	व्यावहारिक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान	1 (एक)	90	40
4.	चिकित्सालय प्रबन्धन एवं अनुसंधान विधियाँ	1 (एक)	80	40
5.	योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आधारित एक लघु निबन्ध	1 (एक)	80	40

01– प्रथम वर्ष बी.वाई.एन.एस. परीक्षा

01–01 – शरीर रचना

प्रश्न पत्र – एक 100 अंक व्याख्यान – 50 सैद्धान्तिक

(1) प्राथमिक शरीर रचना – कोशिका, उत्तक, अवयवों की संरचना

(2) अभिनिवृत्ति शारीर – शरीर पांचभौतिकत्व

(3) अस्थि शारीर – अस्थियों की रचना, संख्या, संधियां।

(4) पेशी शारीर – मांसपेशियों की रचना, संख्या, प्रकार, उपयोग।

(5) सिराधमनी – रक्तवह संस्थान का महत्त्व, हृदय संरचना।

(6) श्वसन एवं उत्सर्जन तंत्र

(7) नाड़ीवह संस्थान, प्रकार, संस्था, महत्व। इडा, पिंगला, सुषुम्ना, षट्चक्र का रचनात्मक ज्ञान।

(8) स्नायु संरचना, प्रकार एवं संख्या।

(9) मर्म शरीर – प्रकार, स्थान, संख्या।

(10) अन्तःस्त्रावी ग्रंथियों की संख्या, प्रकार, संरचना।

प्रायोगिक कर्माभ्यास – शरीर रचना अंक – 100 क्रियात्मक व्याख्यान – 50

1. सम्पूर्ण अस्थि प्रदर्शन
2. अवयव, कोष्ठांग प्रात्यक्षिक ज्ञान (मॉडल द्वारा)
3. अंगरेखांकन शरीर विकीर्ण रचना का प्रात्यक्षिक ज्ञान।

आलोच्य ग्रंथ –

1. अभिनव शारीर क्रिया विज्ञान – आचार्य प्रियवृत्त शर्मा
2. क्रिया शारीर – वैद्य रणजीत राय देसाई
3. ग्रेज–एनॉटामी –
4. मेन्यूअल ऑफ प्रेक्टीकल अनाटामी – कनिंघम

01–02 – शरीर क्रिया एवं जैव रासायनिक विज्ञान

प्रश्न पत्र – एक – 100 अंक (सैद्धान्तिक) व्याख्यान – 50 शरीर क्रिया एवं 30 व्याख्यान जैव रासायनिक

(1) प्राथमिक शरीर क्रिया, कोशिका उतक, अवयवों की क्रिया सहायक अंगों की क्रियाएं।

(2) देह प्रकृति निर्माण, भेद, लक्षण।

(3) विभिन्न संस्थानों की क्रियाएं एवं उपयोगिता।

(4) अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों के हार्मोन्स का शरीर पर प्रभाव।

(5) ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाविधि का ज्ञान।

(6) आहार पांक प्रक्रिया।

(7) स्वतंत्र परतंत्र नाड़ी संस्थान का वर्णन, इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना एवं षट्चक्र निरूपण।

(8) वसा, प्रोटीन, शर्कराओं की संरचना, उपयोगिता, न्यूनाधिक्यावस्था में शरीर पर प्रभाव।

(9) पाचक स्त्रावों का सामान्य विरेचन खनिज एवं जीवतिस्थियों के अभाव में होने वाले रोग।

प्रायोगिक कर्माभ्यास अंक – 100 क्रियात्मक व्याख्यान – 50 शरीर क्रिया एवं 30 व्याख्यान जैव रासायनिक

(1) धातु – उपधातु – मलों की सामान्यावस्था का परिचय।

(2) अणुवीक्षण यंत्र का सामान्य ज्ञान, उपयोग।

(3) हीमोग्लोबीनोमीटर, हीमोसाइटोमीटर, स्फिंग्मोमेनोमीटर, स्फिग्मोग्राफ आदि शरीर क्रियात्मक सम्बन्धी यंत्रों का परिचय, प्रायोगिक ज्ञान।

(4) रक्त पट्टिका निर्माण, रक्त कोषाणु गणना ज्ञान।

आलोच्य ग्रंथ –

1. अभिनव शारीर क्रिया विज्ञान – आचार्य प्रियवृत्त शर्मा
2. क्रिया शारीर – वैद्य रणजीत राय देसाई
3. ग्रे–एनॉटामी –
4. मेन्यूअल ऑफ प्रेक्टीकल अनाटामी – कनिंघम

01– 03. योग एवं वैदिक शारीर

प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 व्याख्यान – 90

ज्ञेयांश –

(1) पुरुष विवेचन (2) प्रकृति विवेचन (3) सांख्योक्त शरीर दर्शन (4) प्राण विवेचन
(5) क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ विवेचन (6) अंतःकरण चतुष्ट्य (7) जीवोत्पत्ति, अण्डज, स्वेदन, जरायुज (8) अग्निसोमात्मक जगत् सिद्धान्त
(9) ज्ञानोत्पत्ति प्रक्रिया (10) त्रिगुण – सत्व रज तम निरूपण (11) षट्चक्र विज्ञान (12) कुण्डलिनी विज्ञान
(14) नाड़ी विज्ञान (15) स्वर विज्ञान (16) मनोनिरूपण

मौखिक परीक्षा 50 अंक
आलोच्य ग्रन्थ –

श्रीमद्भगवत् गीता, अथर्ववेद– वेदों के ज्ञेयांश, हठयोगप्रदीपिका, पातंजल योगदर्शन, गोरक्ष संहिता, योग वशिष्ठ, विदुर नीति, स्मृतियां, उपनिषद्

01–04 प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त

प्रश्न पत्र – 1 सैद्धांतिक अंक – 100 व्याख्यान – 90

(1) प्राकृतिक चिकित्सा दर्शन, सिद्धान्त एवं इतिहास	(2) शरीर, मस्तिष्क, आत्मा, जीवन, चेतना का दार्शनिक महत्व।
(3) प्रकृति के नैसर्गिक नियम – 1. पंचमहाभूत 2. शरीर धर्म – आहार, निद्रा, भय, मैथुन, श्रम। 3. शरीर की स्वतः क्षतिपूर्ति/स्वयं शुद्धि क्रिया।	(4) दिनचर्या, ऋतुचर्या, वेगधारण महत्व।
(5) चिकित्सा विधियों का सामान्य ज्ञान।	(6) विजातीय द्रव्यों का शरीर पर विषाक्त प्रभाव एवं इनके निर्हरणोपाय
(7) स्वास्थ्य के निर्णायक सिद्धान्त।	(8) तीव्र एवं जीर्ण रोगों का तुलनात्मक अध्ययन।
(9) आकाश तत्व का महत्व।	

प्रायोगिक कर्माभ्यास – अंक – 100 व्याख्यान – 70

ज्ञेयांश –

(1) मृत्तिका प्रयोग – शोधन एवं प्रयोग विधियां एवं विविध मृत्तिका प्रकार परिज्ञान।

(2) जलोपचार की विविध विधियां, शोधन एवं प्रयोग परीक्षण।

(3) आतप स्नान, वायु स्नान, वाष्प स्नान, मृत्तिका स्नान की विधियों का परिज्ञान।

आलोच्य ग्रन्थ –

(1) बुनियादी प्राकृतिक चिकित्सा – सुखवीर सिंह

(2) कुदरती उपचार – महात्मा गांधी

(3) सरल प्राकृतिक चिकित्सा – विट्ठलदास मोदी

(4) रिटर्न टू नेचर – एडल्फ जुस्ट

(5) फिलॉसाफी ऑफ नेचर केयर – हेनरी लिंडहर

01–05 संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – एक अंक – 100 व्याख्यान – 90

संस्कृत, व्याकरण एवं साहित्य :–

संस्कृत वर्णों एवं शब्दों (स्वर एवं व्यंजन) का ज्ञान	• 14 प्रत्याहार सूत्र
• संधि – समास ज्ञान	• सामान्य पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग शब्द रूप
• संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण ज्ञान	• सहायक क्रियाऐं
• उपप्रकार वाचक •	• प्रश्नवाचक शब्द
• युक्त सामान्य वाक्यों का ज्ञान – तीनों वचन एवं तीनों पुरुषयुक्त (1) लट्लकार, (2) लोट्लकार, (3) लंगलकार, (4) लृटलकार (5) विधिलिंग	• क्रिया ज्ञान
• संज्ञा – पुलिंग, संज्ञा – स्त्रीलिंग संज्ञा – नपुंसकलिंग	• सर्वनाम – पुलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग
• संयुक्त स्वर	• मिश्रित शब्द

मौखिक परीक्षा अंक – 50

आलोच्य ग्रन्थ –

- संस्कृत स्वयं शिक्षक – श्री डी. सात्वलेकर भाग I, II
- लघु सिद्धान्त कौमुदी
- अनुवाद चन्द्रिका

01–06 योगाभ्यास

प्रायोगिक कर्माभ्यास – अंक –100

1. प्रतिदिन सभी छात्र नियमित रूप से इस सत्र में योगासनों का अभ्यास करेंगे।
2. योगाभ्यास की पूर्व स्थिति, आसन की पूर्ण स्थिति तथा आसन से मुक्त होने की स्थिति, नेत्र एवं श्वास क्रिया के मूल्यांकन आधार पर अंक दिये जाएगें।

02 – द्वितीय बी. वाई. एन. एस.

02–01 विकृति विज्ञान एवं सूक्ष्म जैव रासायनिक विज्ञान

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक– 100 कालांश 80

ज्ञेयांश

व्याधि परिभाषा सामान्य निरूपण

व्याधियों के प्रकार – आगन्तुज, निज शारीरिक, मानसिक, आदिबल प्रवृतादि।

रोग वर्गीकरण

व्याधि क्षमत्व, संवेदनशीलत्व, अनुर्जता निदान पंचक

रोगी परीक्षा विधियां– त्रिविध, अष्टविध, दशविध जनपदोध्वंस

पर्यावरण प्रदोषज विकार

रस–रक्त–प्राण–उदक–अन्न–मेद–अस्थि व मनोवह स्त्रोतोगत व्याधियों का सामान्य परिज्ञान

औपसर्गिक रोग

सूक्ष्मजीवाणु, विषाणु, परजीवीयों के प्रकार, रचना एवं विकृति विवेन,

विसंक्रमण विधिया

वसा, प्रोटीन, शर्कराओं की संरचना, उपयोगिता, न्यूनाधिक्यावस्था में शरीर पर प्रभाव ।

पाचक स्त्रावों का सामान्य विवेचन

खनिज एवं जीवतिस्थियों के अभाव में होने वाले रोग।

प्रायोगिक ज्ञेयांश परीक्षांक –100 कालांश – 40

– रक्त, मूत्र, पुरीषज, ष्ठीवन परीक्षण

सी. एस. एफ. परीक्षा

ई. सी. जी. एक्स–रे– एम. आर. आई. इत्यादि परीक्षण

चिकित्सकीय एवं नैदानिक यंत्रोपकरणों का परिचय

क्रियात्मक अंक विभाजन

दैनिक कार्य	10 अंक	रोग एवं रोगी इतिवृत पत्रक –10 अंक		प्रयोगशाला परीक्षण	20 अंक
यंत्र परिचय	10 अंक	आतुरालीय परीक्षण	25 अंक	मौखिक	25 अंक

आलोच्यग्रंथ

1– माधवनिदान, 2– व्याधिविज्ञान – यादव जी, 3– टेक्स्ट बुक ऑफ बायोकेमिस्ट्री–वेस्ट एण्ड टॉड
4– लेबोरेट्री मेन्युअल– राजगोपाल एवं रामकृष्ण, 5– रोगी परीक्षा विधि– आचार्य प्रियव्रत शर्मा

02–02 स्वस्थवृत एवं सामाजिक स्वास्थ्य

सैद्धांतिक पत्र 1 (एक) अंक– 100 कालांश– 90

ज्ञेयांश –

व्यक्तिगत स्वास्थ्य स्वस्थवृत प्रयोजन, स्वस्थ लक्षण, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतु चर्या, त्रयोपस्तंभ, सद्वृत धारणीयाधारणीय वेग, प्रज्ञापराध, निन्दितानिन्दित पुरूष

– आधार, निद्रा, ब्रह्मचर्य का महत्व, – भूमि तथा निवास स्थान, परीक्षण, – वायु, जल एवं प्रकाश की व्यवस्था,

– अपद्रव्य निवारण, – शौच स्थान, – संक्रामक एवं जनपदोध्वंस व्याधियां, – यौन संसर्गज व्याधियां बचाव के उपाय, – पर्यावरण प्रदूषण परिज्ञान, – प्राथमिक स्वास्थ्य संरक्षण, – परिवार कल्याण कार्यक्रम, – राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम, – मातृशिशु कल्याण कार्यक्रम, – स्वास्थ्य विषयक सांख्यिकी संकलन, विधि, लक्ष्य, जन्म मृत्यु संख्या संकलन विधियां, – स्वास्थ्य शिक्षा प्रचार–प्रसार विधियां

<u>प्रायोगिक परीक्षा</u> अंक– 100 <u>कालांश– 40</u>

1– अंजन, धूम गंडूष कवलविधियों का परिचय
2– जल शोधन विधियों का परिचय, परीक्षण, केन्द्र का अवलोकन
3– दुग्ध शाला निरीक्षण एवं परीक्षण
4– टीकाकरण कार्यक्रम का अवलोकन, सहभागिता
5– पर्यावरण एवं अपद्रव्य निवारणोपाय प्रक्रिया अवलोकन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

– स्वास्थ्य विज्ञान – डॉ. भास्कर गोविन्द घाणेकर
– स्वस्थवृत्त समुच्चय – पं. राजेश्वर दत्त शास्त्री
– टेस्ट बुक ऑफ प्रिवेन्टिव एण्ड सोशियल मेडिसिन – जे. ई. पार्क एण्ड के. पार्क

02–03 चुम्बक एवं वर्ण चिकित्सा

सैद्धान्तिक पत्र – एक अंक – 100 कालांश – 80

ज्ञेयांश

1. चुम्बक चिकित्सा का सामान्य परिचय एवं इतिहास	2. शरीर का चुम्बकीय चिकित्सा सिद्धान्तानुसार अध्ययन
3. शरीर में चुम्बकीय क्षेत्रों का परिचय	4. चुम्बकीय क्षेत्रों के स्वस्थ व्यक्ति में सामान्य कर्म
5. विभिन्न चुम्बकों के प्रकार	6. चुम्बक चिकित्सा के अनुसार रोग विनिश्चय
7. रोग एवं रोगी प्रकृति	8. चुम्बकीय चिकित्सा की कार्मुकता और क्रम
9. चुम्बक चिकित्सा सिद्धान्त	10. चुम्बक चिकित्सा अवधि
11. चुम्बक चिकित्सा प्रक्रिया निर्धारण	12. चुम्बक चिकित्सा के विभिन्न आयाम
13. षट् चक्र एवं मर्म विज्ञान का चुम्बक चिकित्सा के परिप्रेक्ष्य में महत्व	14. रचना शरीर, क्रिया शारीर का चुम्बक चिकित्सा के सन्दर्भ में पर्यालोचन
15. चुम्बक चिकित्सा के सन्दर्भ में रोग निदान पर्यालोचन।	

<u>प्रायोगिक परीक्षा</u> अंक– 100 कालांश– 60

1. चुम्बक चिकित्सा का तीस आतुरों पर विभिन्न व्याधियों में प्रयोग कर लिखित अभिलेख परीक्षार्थ प्रस्तुत किया जायेगा।

02–04 योग दर्शन एवं सिद्धान्त सह योगाभ्यास

प्रश्न पत्र – एक
अंक – 100
व्याख्यान – 90

(1) योग का इतिहास – वैदिक कालीन, उपनिषद् कालीन स्मृति एवं संहिताओं में योग दर्शन योग के आचार्यों का इतिहास एवं काल	(2) योग शब्द की व्युत्पत्ति एवं विविध व्याख्याएं।
(3) योग का सामान्य परिचय, प्रयोजन एवं महत्व।	(4) अष्टांग योग का परिचय।
(5) आयुर्वेद दर्शन एवं योग का तुलनात्मक अध्ययन।	(6) योग के भेद एवं उनका महत्व।
(7) योगा का मनोदैहिक प्रभाव।	(8) षट्कर्म परिचय एवं उपयोगिता।
(9) प्राणायामं की विधि, भेद, लक्षण, रोगनिवारण एवं उपयोगिता।	(10) बन्ध एवं मुद्राओं का सामान्य परिचय।
(11) सत्याबुद्धिः योगसाधना।	(12) योग का मोक्ष एवं वेदनाभाव।

प्रायोगिक अंक – 100 व्याख्यान – 40

(1) षट् कर्माभ्यास	(2) योगासन, प्राणायाम, मुद्राएं, बन्ध
(3) ध्यान विधियां	

आलोच्य ग्रन्थ –

(1) पांतजल योग दर्शन	(2) हठयोग प्रदीपिका
(3) घेरण्ड संहिता	(4) योग और आयुर्वेद – डॉ. राजकुमार जैन
(5) चरक, सुश्रुत अष्टांग संग्रह के उपयोगी अंश	(6) राजयोग – स्वामी विवेकानन्द

02–05 उपवास चिकित्सा

प्रश्न पत्र – एक अंक – 100 व्याख्यान – 90

(1) उपवास चिकित्सा का परिचय	(2) उपवास विधियों का इतिहास
(3) प्राणी जगत में उपवास क्रियाओं का सैद्धान्तिक विवेचन	(4) उपवास विज्ञान
(5) उपवास का दार्शनिक महत्त्व	(6) उपवास विधि का व्याधि, व्याधि प्रकृति, शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव परिज्ञान
(7) "सेन" उपवास विधि के नियम एवं चिकित्सात्मक उपयोग	(8) उपवास विधि के विभिन्न वर्गीकरण
(9) उपवास का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व	(10) उपवास के पूर्व एवं पश्चात् कर्म

प्रायोगिक अंक – 50 (मौखिक परीक्षा)

(1) 25 व्यक्तियों पर उपवास चिकित्सा का प्रभावात्मक परीज्ञान कर प्रायोगिक परीक्षा के समय प्रत्येक छात्र द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा जिसका मूल्यांकन कर अंक दिये जा सकेंगे।

03– तृतीय बी.वाई.एन.एस. परीक्षा

03–01 अष्टांग योग, षड्दर्शन एवं योगाभ्यास

सैद्धान्तिक पत्र 1 (एक) अंक : 100 व्याख्यान – 80

– पातंजल योग सूत्र परिचय, यम निरूपण, आवश्यकता एंव मनोभिग्रह में उपयोगिता, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह सिद्धान्तों का विवेचन, नियम निरूपण, आवश्यकता एवं मनोदैहिक प्रभाव, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान का परिचय भेद, क्रियाविधि एवं उपयोगिता, आसन – परिभाषा, आसन के भेद, विधियां, नियमोपनिपम एवं उपयोगिता, प्राणायाम, भेद, विधि, नियमोपनियम एंव प्राणायाम विधियों का मनोदैहिक प्रभाव, प्रत्याहार निरूपण, धारणा ~~– विधियां एवं निरूपण, ध्यान परिभाषा, विधि, भेद, नियम,~~ उपयोगिता, समाधि निरूपण, अन्तः बाह्य वृत्तियों के निराधान का क्रमिक स्वरूप, संप्रज्ञात–असंप्रज्ञात विवेचन।

षड् दर्शन परिचय : –

– सांख्य दर्शन का सामान्य परिचय, योग एवं तर्क दर्शन परिचय, न्याय एवं तर्क दर्शन परिचय, वैशेषिक दर्शन परिज्ञान, तर्क दर्शन परिचय, मीमांसा, वेदान्त दर्शन का परिज्ञान

पाठ्यग्रंथ –

– दर्शन कारिकाएं एवं विभिन्न उपयोगी आर्ष ग्रंथों के अंश।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 80

– नेति, धोति, बस्ति, त्राटक, नौलि एवं कपाल भांति विधियों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास, बंध मुद्रा का अभ्यास, विभिन्न आसनों का दैनिक अभ्यास।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. पांतजल योग सूत्र – सी.सी.आर.वाई.एन. एवं कैवल्यधाम लोनावाला का प्रकाशन।	2. घेरण्ड संहिता – मुंगेर योग केन्द्र प्रकाशन।
3. हठयोग प्रदीपिका – स्वामी आत्माराम जी	4. दर्शन कारिकाएं एवं विभिन्न उपयोगी आर्ष ग्रंथों के अंश।

03–02 प्राकृतिक चिकित्सा निदान

सैद्धांतिक परीक्षा – 2 (दो) अंक – 100 कालांश – 90

ज्ञेयांश –

– प्राकृतिक चिकित्सा में निदान सिद्धान्तों का विवेचन।

– आकृति विज्ञान से रोग निदान।

– विजातिय तत्व ज्ञान – विजातिय तत्वों की परिभाषा, उनके शरीर में एकत्रित होने की प्रक्रिया, विजातिय तत्वों के संचय से होने वाले परिवर्तन तथा विजातिय तत्वों का विकृति विज्ञान परक अध्ययन।

– प्रकृति – प्रकृति का मूल उद्भव एवं बालको की व्याधियों का उपचार।

– व्यसनों से शरीर में विजातिय तत्वों की उत्पत्ति एवं उनका प्रभाव – तम्बाकू, मद्य, चाय, कॉफी, अफीम आदि।

– आंतरिक अवयवों की व्याधियां एवं उनके उपचार।

– विजातिय तत्वों को निष्कासित किये जाने की प्रक्रियाएं।

प्रायोगिक परीक्षा 100 अंक <u>कालांश – 40</u>

– रोग निदान विधियों का चिकित्सालय में प्रत्यक्ष कर्माभ्यास

– 20 आतुरों के परीक्षण की पंजिका संधारण।

– प्राकृतिक चिकित्सा निदान यंत्रोंपकरणों का परिज्ञान

संदर्भ ग्रन्थ –

1. Iridology: A Guide to it is Analysis and Preventive Health Care - By Adam J. Jackson
2. Iridology: How to Discover Your ..... Pattern of Health and well being Through the Eye - By Dorothy Hall
3. Iridology: A Complete Guide to Diagnosing through the Iris and alll Related Norms of treatment -

03–03 प्राथमिक चिकित्सा एवं आधुनिक निदान विधियाँ

सैद्धांतिक परीक्षा – 1 (एक) अंक – 100 <u>कालांश – 90</u>

ज्ञेयांश –

– प्राथमिक चिकित्सा के सामान्य एवं विशेष सिद्धान्त।	– व्रण, रक्तस्राव रोकने के उपाय।
– मूर्च्छा, सन्यास के भेद एवं उपाय।	– श्वान दंश, सर्प दंश, वृश्चिक दंश के उपाय।
– दग्ध चिकित्सा।	– अंशुघात उपाय।
– भग्न एवं उनके उपाय।	
– विषाक्तता परिज्ञान एवं प्राथमिक उपचार।	– उन्माद एवं अपस्मार।
– कृत्रिम श्वसन विधियाँ।	– विकृति विज्ञानीयम्।
– रोगेतिवृत निर्धारण विधि।	– सांस्थानिक परीक्षण – उदर परीक्षण, स्वसन संस्थान परीक्षण, हृद परीक्षा, केन्द्रीय नाड़ी संस्थान परीक्षण, जत्रूर्ध्व परीक्षण, स्त्री शारीर परीक्षण परिज्ञान।
– प्रारम्भिक निदान।	– प्रयोगशालीय परीक्षण का परिज्ञान।
– आधुनिक परीक्षण विधियों का परिचय।	– रक्त, मल, मूत्र, ष्ठीवनादि परीक्षाओं का ज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा 100 अंक कालांश – 40

– रोगेतिवृतिय एवं रोंगी परीक्षा विधियों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास, 20 आतुरों का रोगेतिवृत संधारण, विभिन्न प्रयोशालीय उपकरणों का प्रत्यक्ष ज्ञान, रोगी रोग परीक्षा के प्रयोगशालीय परीक्षणों का ज्ञान।

संदर्भ ग्रन्थ –

– रोगी रोग परीक्षा विधि – प्रियव्रत शर्मा, Hutchinson's clinical methods, Clinical Diagnosis : - By Jal Vakil, First Aid : - By Red Cross Society

03–04 मेनिपूलेटिव थैरापैटिक्स

सैद्धांतिक परीक्षा – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

ज्ञेयांश –

– अभ्यंग उपचार विधि का इतिहास एवं परिचय।
– अभ्यंग विधियों के नियम एवं परिचय।
– अभ्यंग उपचार विधि के परीप्रेक्ष्य में विभिन्न शरीरावयों का अध्ययन – त्वचा, पेशियां, हृदय एवं रक्त संवहन, तंत्रिका तंत्र, अस्थि तंत्र।
– अभ्यंग में स्नेहों का प्रयोग एवं समुचित पीड़न (दाब) का महत्व।
– अभ्यंग के विभिन्न प्रभाव – पोषण, रक्त संचरण, रक्त प्रसाधन, शोथशमन, मेदापनयन प्रभाव परिज्ञान।
– मर्म पीड़न विधियों का परिज्ञान।
– संधियों की विभिन्न क्रियाओं – आकुंचन, प्रसारणादि कर्मों का परिज्ञान।
– अभ्यंग का विभिन्न स्थानों पर प्रभाव – यकृत, आमाशय, हृदय, मस्तक, सुषुम्ना, स्थान पर अभ्यंग की विशेष विधियां।
– चीरो प्रेक्टिस एवं ओस्टियोपैथी का परिचय, विधि एवं प्रभाव का अध्ययन।

प्रायोगिक परीक्षा 100 अंक कालांश – 40

– 20 आतुरों पर अभ्यंग विधियों का प्रत्यक्ष प्रायोगिक अभ्यास, 10 आतुरों पर पंचकर्म उपक्रमों का प्रत्यक्षीकरण।

संदर्भ ग्रन्थ –

– Massage Books: By George Downing, Massage: By Constant Young, The Complete Book of Massage: By Clare Maxwell Hudson

03–04 मर्मवेधन (एक्यूपंचर विधियाँ)

सैद्धांतिक परीक्षा – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

ज्ञेयांश –

– मर्मपीड़न चिकित्सा (एक्यूप्रेशर) परिचय, सिद्धान्त एवं उपयोगिता।	– परपरागत एवं आधुनिक मर्मपीड़न सिद्धान्त।
– मर्म स्थलों के निर्धारण की तकनीक।	– मर्मपीड़न के दुष्प्रभाव।
– विभिन्न मेरेडियंश का ज्ञान।	– अत्यन्त संवेदनशील बिन्दुओं का ज्ञान।
– मर्म चिकित्सा निदान विधियों का ज्ञान।	– मर्म वेधन द्वारा संज्ञाहरण।
– प्रत्यावर्तन पद्धति का परिज्ञान।	– मर्मपीड़न विज्ञान का महत्व।

प्रायोगिक परीक्षा 100 अंक कालांश – 40

– 20 आतुरों पर मर्म वेधन, प्रत्यावर्तन एवं मर्मपीड़न पद्धति का प्रत्यक्ष परीक्षण।

संदर्भ ग्रन्थ –

– Clinical Practice of Acupuncture by A.L. Agarwal
– Clinical Acupuncture by Dr. Anton Jayasurya
– Principles and practice of Acupuncture by Dr. J.K. Patel
– Health in your hands by Devendra Vora
– Shiatsu by Ohashi

04– चतुर्थ बी. वाई. एन. एस. परीक्षा

04–01 आहार एवं पोषण विज्ञान

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

– शरीर पोषण, पंचमहाभूतानुसार विविध आहार द्रव्य, रसानुसार आहार द्रव्योत्पत्ति, आहार द्रव्यों के घटक एवं उनके गुणकर्म
– आहारविधि – आहारविधि विशेषातयन, पथ्यापथ्याहार, भोजन पाचन अवधि, आहार के दुष्परिणाम जन्य रोग, संतर्पण–अपतर्पण निमित्तज व्याधियां ।
– आहार का प्रमाण एवं पोषण – भोजन के आवश्यक अवयव, आदर्श भोजन, मात्रा, वय : व्यवसाय गर्भिणी बाल भेद से भोजन की मात्रा।
– प्रोटीन, शर्करा, वसा, खनिज, लवण, जीवनीय तत्वों का आहार प्रयोजन उनकी दैनिक मात्रा।
– पोषणाभाव जन्य व्याधियां।
– पोषण विषयक राष्ट्रीय कार्यक्रम।

– शाकाहार – मांसाहार के गुणावगुण, मांस सेवन जन्य व्याधियां, दुग्धाहार–फलाहार का महत्व, भोजन में मसालों की उपयोगिता, हीनाति मात्र दोष।
– आहार परिणाम कर भाव।
– आहार द्रव्य वर्गों का परिज्ञान।
– स्वस्थ एवं आतुर अवस्था में पथ्य–अपथ्य का महत्व।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– आतुरालय में पथ्य निर्माण अवलोकन, क्षेत्र में जाकर स्वास्थ्य परीक्षण एवं पोषणाभाव जन्य अवस्था का ज्ञान, विभिन्न पथ्य निर्माण कल्पनाओं का अभ्यास।

संदर्भ ग्रन्थ –

– चरक, सुश्रुतादि संहिताओं के उपयोगी अंश, स्वस्थ्यवृत्त विषयक पुस्तकों से सम्बन्धित अंश, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन, हैदराबाद से प्रकाशित प्रकाशन।

04–02 प्रसूति एवं स्त्री रोग चिकित्सा

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

– स्त्रीशरीर विज्ञान – स्त्री शरीर के विशेष प्रजनन अवयव श्रोणिः, आशयः, योनिः, पेशी–स्त्रोतस्, स्तनं, धमनी, गर्भ, प्रकृति एवं विकृति परक वर्णन।
– रजो विज्ञान – स्त्री शुक्र रजः, ऋतुकालः, ऋतुमती, रजप्रवृत्तिः, प्रमाण, स्वरूपं, कार्य।
– गर्भ विज्ञान – गर्भ आकृति, मासानुमासिकवृद्धि, गर्भपोषण, अपरानिर्मितिः, नाभिनाड़ी, आसन आदि का वर्णन।
– गर्भिणी विज्ञान – गर्भिणी परिचर्या, स्वास्थ्यपरिचय, आहार--विहार व दिनचर्या।
– प्रसव विज्ञान – परिभाषा, अवधि, लक्षण, अवस्था, प्रसव क्रम, सूतिकागारम्, प्रसवकालावस्था, जातमात्र परिचर्या, नवजात शिशुचर्या।
– स्त्रीरोग – कृच्छार्तवः, रक्तप्रदर, योनिव्यापद्, स्तनकीलक, स्तनार्बुद, स्तनविद्रधि, उत्तरवस्ति, पिचु वर्ति प्रयोग आदि।
– योन संक्रमण जन्य व्याधियां ।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– प्रसवदर्शन न्यूनतम दस प्रसवों का अभ्यास, स्त्री रोग सम्बन्धी दस स्त्री आतुरों का इतिवृत पत्रक निर्धारण, गर्भनिरोधक विधियों का ज्ञान, विभिन्न यन्त्र उपकरणों का परिचय एवं प्रयोग परिज्ञान।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रसूति विज्ञानम् – आचार्य रमानाथ द्विवेदी, 2. अभिनव प्रसूति तंत्रम् – वैद्य दामोदर शर्मा गौड़,
3. स्त्रीरोग विज्ञानम् तंत्रम् – वैद्य रमानाथ द्विवेदी, 4. टेक्स्ट बुक आफ गायनाक्लोजी – सी.एस.डान
5. टेक्स्ट बुक आफ आब्स्टैट्रिक – सी.एस.डान

04–03 योग एवं रोग उपचार

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

– रोग मुक्ति में आसन, प्राणायाम, ध्यानादि विधियों का महत्व, प्राण शक्ति वर्द्धन में बन्ध, मुद्रा, त्राटकादि क्रियाओं का योगदान, पाचन तंत्र विकृतियों के उपचार में षट् क्रियाओं की उपयोगिता, अस्थि संस्थान, अन्तःस्त्रावी प्रणाली, स्नायु तंत्र, श्वसन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, हृदय एवं रक्तवाहिकाओं की विकृतियां, प्रजनन तंत्र पर योग क्रियाओं का प्रभाव, जत्रूर्ध्व व्याधियों में योग क्रियाओं का प्रभाव, ध्यान विधियों का मनोदैहिक प्रभाव, शिथिलिकरण क्रियाओं का तकनीकी ज्ञान, योग का मानसिक भावों पर प्रभाव – व्यक्तित्व, व्यवहार, संवेदना, आत्मनियंत्रण, स्वसम्मोहन, अनुशासित जीवन विधि ज्ञान, योग विधियों से तनाव प्रबन्धन, मधुमेह, श्वास, स्थौल्य, अनिद्रा आदि व्याधियों का योग क्रियाओं से निवारण।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– योगविधियों का सांख्यिकी पद्धति से विश्लेषण, जन–स्वास्थ्य शिक्षा हेतु चार्ट्स–पोस्टर्स निर्माण, योग–केन्द्र/चिकित्सालय में आतुरों को योग क्रियाओं की विधियों का परिज्ञान एवं प्रभाव आंकलन।

संदर्भ सूची –

– योग से सामान्य व्याधियों का उपचार – स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– यौगिक थैरेपी – डॉ. विनेकर, भारत सरकार का प्रकाशन

– योग निद्रा – स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– योग केन्द्र लोनावाला, मुंगेर तथा सी.सी.वाई.एन. का प्रकाशन।

04–04 जल एवं मृतिका उपचार

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

– जल चिकित्सा का परिचय एवं इतिहास, जल के भौतिक एवं रासायनिक गुणों का ज्ञान, जल चिकित्सा का शरीर क्रियात्मक प्रभाव – त्वचा, श्वसन, रक्त संवहन एवं तंत्रिका तंत्र पर जल एवं ताप का प्रभाव, जल का विभिन्न तीव्रव्याधियों में महत्व, जीर्ण व्याधियों में जल तत्व का महत्व, जल चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्त, जल का चिकित्सा परक प्रयोग विधि, रक्ताल्पता, आमवात, मधुमेह, श्वास, हृदय एवं वृक्क विकारों में जल चिकित्सा का महत्व, जल स्नान की विभिन्न विधियॉं, जल द्वारा शीत एवं उष्ण डूशेज विधियों का ज्ञान, जल की बाह्य एवं आभ्यंतरिक प्रयोग विधियॉं, जल मृतिका (मड थेरेपी) उपचार पद्धति का परिज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– जल एवं मृतिका चिकित्सा का 20 आतुरों पर विभिन्न व्याधियों में प्रयोग परक पंजिका संधारण।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

– Baths : By S.J. Singh

– My Water Cure : By Scbastian Kneipp

– Rational Hydrotherapy : By Dr. J.H. Kellogg

– The Healing Clay : Michel Abserra

– Our Earth and Cure : Raymond Dextroit

04–05 भौतिक चिकित्सा

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 90

– भौतिक चिकित्सा परिचय, भौतिक चिकित्सा के यांत्रिक सिद्धान्त – बल, गुरूत्वाकर्षण का शरीर पर प्रभाव, लिवर, स्प्रिंग, दोलक के प्रयोगों का ज्ञान, व्यायाम चिकित्सा का परिचय, प्रारम्भिक स्थिति – व्यायाम चिकित्सा से पूर्व मांस पेशीयों की स्थिति का ज्ञान, एच्छिक एवं स्वेच्छिक गतियों का परिचय एवं ज्ञान, मांस पेशीयों की रचना, स्थान, क्रिया एवं प्रकार परिज्ञान, संधियों के प्रकार, स्थान एवं गति का ज्ञान, शिथिलीकरण विधियों का ज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– 20 आतुरों पर भौतिक चिकित्सा की विभिन्न विधियों से उपचारात्मक प्रबन्धन एवं पंजिका संधारण।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

– Principles of Excreise Therpay by Dena Gardiner

– Tidy Physiotherapy

– Clayton's Electrotherapy and Actinotherapy

05 – पंचम बी.वाई.एन.एस. परीक्षा

05–01 द्रव्यगुण विज्ञान

सैद्धांतिक – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 80

ज्ञेयांश –

– प्राकृतिक चिकित्सोपयोगी द्रव्यों का परिज्ञान।

– औषध द्रव्यों का द्रव्य रस–गुण–वीर्य–विपाक–प्रभाव एवं कर्म का सामान्य परिचय

– द्रव्यों के नाम पर्याय, द्रव्य संग्रह विधि, द्रव्यों में पायी जाने वाली अशुद्धियां एवं उनका शोधन।

– औषध द्रव्यों के अन्तः बाह्य प्रयोग की विधियां एवं मात्रा का सामान्य ज्ञान।

चिकित्सा में प्रयुक्त निम्नांकित द्रव्यों का परिचय एवं प्रयोग का ज्ञान –

हरीतकी, आमलकी, विभीतक, गुडूची, बिल्व, ज्योतिष्मती, मधुयष्टि, बाकुची, अशोक, आरग्वध, लवंग, एला, खदिर, यवानी, शतपुष्पा, जीरक, मंजीष्ठ, चंदन–रक्तपीत श्वेत, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, शतावरी, अश्वगंधा, सर्पगन्धा, हरिद्रा, रसोंत,

तालीश पत्र, तुलसी, मरिच, पिप्पली, शुण्ठी, जातीफल, अर्जुन, आर्द्रक, घृतकुमारी, रसोन, पलाण्डु, गुग्गुलु, चक्रमर्द, मेथिका, कर्पूर आदि द्रव्यों का ज्ञान।

– जल, दुग्ध, मधु, इक्षु, तैल, मद्य, शूक धान्य, शिम्बी धान्य, शमीधान्य एवं लवण वर्ग के द्रव्यों का सामान्य परिज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 40

– द्रव्यों का परिचय, संग्रहात्मक निबन्ध, उपचार में प्रयोग की विधियों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास।

– मौखिक परीक्षा।

आलोच्य ग्रन्थ –

– द्रव्यगुण हस्तामलक – वैद्य बनवारी लाल मिश्र, द्रव्यगुण विज्ञान – आचार्य प्रियव्रत शर्मा, भावप्रकाश के संदर्भित अंश।

05–02 जल चिकित्सा

सैद्धांतिक – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 80

ज्ञेयांश –

– जल चिकित्सा के विशेष नियम, विभिन्न स्नान – वायु स्नान, रशियन बाथ, टर्किश बाथ, वाष्प स्नान, नाड़ी स्वेद स्नान, वाष्पअवघ्राण, उष्णवायु स्नान, अन्तंग एवं बहिरंग स्नान विधियां, जल स्नान की विभिन्न तकनीक – शीत एवं उष्ण स्नान, जानु कटी उष्ण स्नान, हस्तपाल स्नान, प्राकृतिक स्नान, वर्लपूल स्नान, इमर्शन स्नान, विचिस्प्रे मसाज, नदी एवं समुद्र स्नान, जल चिकित्सा का वेदना शामक प्रभाव, जल चिकित्सा का शोथन प्रभाव, जल चिकित्सा का मूत्रल प्रभाव, जल चिकित्सा का अग्निमांद्ये एवं अम्ल पित्त निवारण प्रभाव, विभिन्न व्याधियों में जल पट्टिकाओं का उपयोग, बस्ति विधि से जलोपचार।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– जल एवं मृतिका चिकित्सा का 20 आतुरों पर विभिन्न व्याधियों में प्रयोग परक पंजिका संधारण।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

– Baths	:	By S.J. Singh
– My Water Cure	:	By Scbastian Kneipp
– Rational Hydrotherapy	:	By Dr. J.H. Kellogg
– The Healing Clay	:	Michel Abserra
– Our Earth and Cure	:	Raymond Dextroit

05–03 व्यावहारिक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान

सैद्धांतिक – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 80

ज्ञेयांश –

– प्राकृतिक विधियों से रोगोपचार परिचय एवं महत्व, व्याधि कारक एवं प्राकृतिक पद्धति से निवारण, शारीरिक एवं मानसिक आदतों का महत्व, बस्ति, उपवास, आहार, व्यायाम से स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग मुक्ति उपाय, बस्ति, शीतोष्णावचारण, वाष्पस्नान, मृत्तिका, अभ्यंग, सूर्य स्नान, कटिमेहन स्नान, पृष्ठ स्नान, पाद प्रक्षालन, वायु स्नान, स्पंज, जल परिषेकादि विधियों से रोगोपचार परिज्ञानं, अम्लपित्त, विबंध ग्रहणी, प्रवाहिका, संधिवात, गृध्रसी, श्वास, मधुमेह, हद्यरोग, चर्मरोग, अनिद्रा, अवसाद, ग्रीवा–मन्या स्तम्भ, अंश–बाहु स्तम्भादि विकारों का प्राकृतिक विधियों से उपचार प्रबन्ध परिज्ञान, आरोग्य रक्षक प्राकृतिक उपायों का परिचय, जल बस्ति, आंत्र प्रक्षालन, उपवास विधि, प्राकृतिक भोजन – अंकुरित धान्य, तन्तुमय भोजन, सात्त्विकादि आहार प्रयोजन, सूर्य स्नान, कटि स्नान, पाद–हस्त–पृष्ठवंश एवं मेहन स्नान, विश्राम एवं शिथिलीकरण, चंक्रमण विधि एवं प्रकार, मर्दन विधियां एवं प्रभाव, आयुप्रकर्ष जन्य व्याधियों के प्राकृतिक उपाय, प्राकृतिक विधियों से परिवार–नियोजन।

प्रायोगिक परीक्षा अंक – 100 कालांश – 60

– योग प्राकृतिक केन्द्र में आगत आतुरों को प्राकृतिक विधियों से उपचार प्रशिक्षण, विभिन्न रोगोपचारों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास, बीस आतुरों का विवरण पत्र प्रस्तुतीकरण।

संदर्भ ग्रन्थ –

– सी.सी.आर.वाई.एन. का प्रकाशन, प्राकृतिक चिकित्सा विधि – शरद प्रसाद, – Practice of Nature Cure – Henry Lindlhar, प्राकृतिक चिकित्सा – गांधीजी, प्राकृतिक उपचार विधियां – डॉ. राजीव रस्तोगी, मालिश का मर्म – एस. वी. गोविन्दन, रोगों की सरल चिकित्सा – विट्ठल दास मोदी।

05–04 चिकित्सालय प्रबन्धन एवं अनुसंधान विधियाँ

सैद्धांतिक – 1 (एक) अंक – 100 कालांश – 80

ज्ञेयांश –

Section - 1 - Hospital Administrator - The Hospital administrator - Role and Responsibilities Profile of an effective Hospital Administrator.

Section - 2 - Managerial Skills - 1. Planning, 2. Information System, 3. Communication 4. Decision Making, 5. Monitoring Time, 6. Managing Time, 7. Meetings

Section - 3 - Hospital Organisation - 1. Hospital Organisation - Structure and Function 2. Hospital Committees

Section - 4 - The Hospital - 1. Role of Hospital in Health Care, 2. Hospital Planning and design 3. Special Features of Nature cure Hospital, Qualities of Therapist, Hospital Atmosphere, Scientific Attitudes, Awareness of Scope, Limitations of nature cure. 4. Newer Technology in Treatment, Through Naturopathy